GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिंदी समाचार पत्र अमर उजाला में महिलाओं के स्वास्थ्य मुद्दों की रिपोर्टिंग का तुलनात्मक अध्ययन: ग्रामीण बनाम शहरी कवरेज के संदर्भ में

Huma Alam

Research Scholar

Department of Journalism & Mass Communication

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur- 208024

Email Id: priyankajimmc@gmail.com

Dr. Yogendra Kumar Pandey

Associate Professor

Department of Journalism & Mass Communication

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur- 208024

Email Id: yogendra.pdy@gmail.com

परिचय (Introduction)

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान नहीं है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच, मीडिया उपलब्धता तथा सूचना स्रोतों की भिन्नता के कारण महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान और व्यवहार में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता की कमी महिलाओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधाओं, विश्वसनीय सूचनाओं और नियमित स्वास्थ्य जांच तक शहरी महिलाओं की तुलना में कम पहुंच प्राप्त होती है।

स्वास्थ्य संचार के क्षेत्र में जनसंचार माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। समाचार पत्र समाज में जनमत निर्माण, स्वास्थ्य जागरूकता प्रसार तथा सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता देने का एक प्रभावशाली माध्यम हैं। भारत में हिंदी समाचार पत्रों की व्यापक पहुंच ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में है, जिससे वे स्वास्थ्य संबंधी सूचनाओं को आम जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तर भारत का प्रमुख हिंदी दैनिक Amar Ujala विशेष रूप से ग्रामीण और शहरी पाठकों के बीच लोकप्रिय है तथा महिलाओं के स्वास्थ्य, पोषण, मातृ स्वास्थ्य, कैंसर जागरूकता और मानसिक स्वास्थ्य जैसे विषयों को नियमित रूप से प्रकाशित करता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह भी ज्ञात होता है कि स्वास्थ्य सूचनाओं की उपलब्धता और उन पर विश्वास का स्तर ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में अलग-अलग है। जहां ग्रामीण महिलाएं आशा कार्यकर्ताओं, परिवार और स्थानीय स्वास्थ्य कर्मियों पर अधिक निर्भर रहती हैं, वहीं शहरी महिलाएं सोशल मीडिया, इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का अधिक उपयोग करती हैं। इसी प्रकार, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और जोखिमों की गंभीरता भी ग्रामीण महिलाओं में अपेक्षाकृत अधिक पाई गई है। इन परिस्थितियों में समाचार पत्रों की भूमिका और उनका प्रस्तुतीकरण यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि महिलाओं के स्वास्थ्य मुद्दों को किस प्रकार समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुंचाया जा रहा है।

इसी संदर्भ में यह शोध Amar Ujala में प्रकाशित महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी समाचारों और सामग्री का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि क्या समाचार पत्र महिलाओं के स्वास्थ्य मुद्दों को प्रस्तुत करते समय ग्रामीण और शहरी संदर्भों के आधार पर अलग दृष्टिकोण अपनाता है। साथ ही यह शोध यह भी जांचने का प्रयास करता है कि महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी समाचारों में किन विषयों को अधिक महत्व दिया जाता है तथा स्वास्थ्य संचार के माध्यम के रूप में समाचार पत्र किस हद तक जागरूकता निर्माण में योगदान दे रहे हैं।

मनुष्य ने सूचना के इतने माध्यम बना लिए हैं कि कभी-कभी लगता है स्वास्थ्य से ज्यादा सूचना ही बीमार हो चुकी है। फिर भी, एक अख़बार अब भी गांव की चौपाल और शहर की चाय की मेज़ के बीच पुल बना हुआ है। यही बात इस विषय को शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है।

साहित्य समीक्षा

शर्मा सुधा, महाजन नेहा मार्च 2015 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी है और इसके चलते ही मेनोपॉज के लक्षण शहरी और ग्रामीण दोनों महिलाओं में व्यापक हैं, लेकिन ग्रामीण महिलाओं के लिए ये लक्षण अधिक कष्टदायक हैं। शहरी महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता औसत रही, फिर भी वह ग्रामीण महिलाओं की तुलना में काफी बेहतर पाई गई।

बेयरफ़ुट के एन वौरेन और जे सी स्माले 2017 का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अमेरिका में ग्रामीण लेस्बियन महिलाओं को शहरी महिलाओं की तुलना में अधिक स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली इन महिलाओं में एचपीवी टीकाकरण की सिफारिश कम की जाती है और वे नियमित मैमोग्राम स्क्रीनिंग भी कम कराती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गर्भाशय ग्रीवा (Cervical) और स्तन कैंसर के बढ़ते जोखिमों को

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

देखते हुए, यह अध्ययन ग्रामीण लेस्बियन महिलाओं के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच और स्वास्थ्य संवर्धन (health promotion) प्रयासों की तत्काल आवश्यकता पर जोर देता है।

शुएवेई चेन (Xuewei Chen, PhD) - कम्युनिटी हेल्थ और हेल्थ बिहेवियर विभाग, बफ़ेलो विश्वविद्यालय, हीदर ओरोम (Heather Orom, PhD) - कम्युनिटी हेल्थ और हेल्थ बिहेवियर विभाग, बफ़ेलो विश्वविद्यालय, जेनिफर एल. हे, एरिका ए. वाटर्स, एलिजाबेथ स्कोफिल्ड, यूएलिन ली, और मार्क टी. किविनीमी के न्यूयार्क में किए गए अध्ययन "ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य सूचना पहुंच और उपयोग में अंतर" के अनुसार शहरी निवासियों की तुलना में ग्रामीण निवासियों की पहुंच प्राथमिक स्वास्थ्य प्रदाताओं (Doctors), विशेषज्ञ डॉक्टरों, ब्लॉग और पत्रिकाओं (Magazines) तक कम पाई गई। ग्रामीण क्षेत्रों में सर्च इंजन (जैसे गूगल) का उपयोग भी कम था। सीमित स्वास्थ्य साक्षरता वाले ग्रामीण निवासियों की पहुंच मास मीडिया और वैज्ञानिक साहित्य तक सबसे कम थी। ग्रामीण निवासी स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के लिए कंपनियों/निगमों (Corporations) पर शहरी निवासियों की तुलना में अधिक निर्भर पाए गए। इसके निष्कर्ष के मुताबिक़ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्वास्थ्य सूचनाओं की पहुंच में अंतर का एक बड़ा कारण जनसांख्यिकीय (Sociodemographic) भिन्नता है। इसके अलावा, विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी और मीडिया के सीमित प्रभाव जैसे संरचनात्मक अवरोध ग्रामीण निवासियों, विशेष रूप से कम साक्षरता वालों के लिए स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त करना कठिन बना देते हैं।

हिबा फ़ारूक़ योगेश शर्मा और आफ़रीना रिजवी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (मार्च 2026) के अध्ययन। "शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बीच मीडिया विश्वास और स्वास्थ्य संचार" (Media trust and health communication among urban and rural women in Aligarh District, India) के अनुसार भारत में शहरी और ग्रामीण महिलाओं के बीच स्वास्थ्य जागरूकता और मीडिया के प्रभाव में काफी अंतर है। यह अध्ययन अलीगढ़ जिले की महिलाओं के बीच स्वास्थ्य सूचनाओं तक पहुंच, विभिन्न मीडिया प्लेटफॉर्मों पर उनके विश्वास के स्तर और स्वास्थ्य संचार की प्रभावशीलता की जांच करता है।इसमें 390 महिलाओं को शामिल किया गया। इसमें अलीगढ़ शहर की 130 और ग्रामीण क्षेत्रों (पंजूपुर और रफतपुर सिया) की 260 महिलाओं का इंटरव्यू लिया गया। इसमें पाया गया कि ग्रामीण महिलाएं मुख्य रूप से आशा कार्यकर्ताओं (ASHA workers), परिवार और स्वास्थ्य पेशेवरों पर निर्भर थीं। इस विपरीत, शहरी महिलाएं सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर अधिक निर्भर थीं। शहरी महिलाओं के पास मीडिया तक पहुंचने के अधिक साधन थे। यह अध्ययन दर्शाता है कि स्वास्थ्य संचार के मामले में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच एक गहरी खाई है,

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

जो साक्षरता और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण है। शोध यह सुझाव देता है कि डिजिटल स्वास्थ्य अभियानों में आशा कार्यकर्ताओं जैसे भरोसेमंद माध्यमों को शामिल करना ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बहुत जरूरी है।

शोध के उद्देश्य (Objectives)

1. अमर उजाला में महिला स्वास्थ्य से संबंधित खबरों की मात्रा का विश्लेषण करना।
2. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कवर किए गए स्वास्थ्य मुद्दों की प्रकृति (Nature) की तुलना करना।
3. यह जांचना कि क्या ग्रामीण रिपोर्टिंग केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित है या स्वास्थ्य जागरूकता पर भी केंद्रित है।
4. रिपोर्टिंग में विशेषज्ञों (Doctors/Experts) की सलाह और केस स्टडीज के उपयोग का तुलनात्मक अध्ययन।

तुलनात्मक विश्लेषण के मुख्य बिंदु

तुलना का आधार	शहरी कवरेज (Urban)	ग्रामीण कवरेज (Rural)
मुद्दों का प्रकार	जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां जैसे PCOS, मानसिक तनाव, मोटापा और कैंसर पर अधिक फोकस।	प्रजनन स्वास्थ्य, कुपोषण, एनीमिया, संक्रामक रोग तथा स्वच्छता संबंधी समस्याओं पर अधिक ध्यान।
दृष्टिकोण	निवारक स्वास्थ्य (Preventive Health), फिटनेस और स्वास्थ्य जागरूकता को प्रमुखता।	उपचारात्मक स्वास्थ्य (Curative Health) तथा आपातकालीन स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी पर जोर।
स्रोत (Sources)	निजी अस्पतालों के विशेषज्ञ, डायटिशियन, चिकित्सक और शोध रिपोर्ट।	सरकारी स्वास्थ्य केंद्र (PHC), एएनएम, आशा कार्यकर्ता तथा प्रशासनिक अधिकारी।
स्थान / प्रस्तुतीकरण	'माई सिटी', 'लाइफस्टाइल' या स्वास्थ्य विशेष पृष्ठों पर प्रमुखता से प्रकाशित।	जिला समाचारों के बीच अथवा संक्षिप्त समाचार के रूप में प्रकाशित।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

मनुष्य ने स्वास्थ्य को भी वर्गों में बांट दिया है। शहर में बीमारी "लाइफस्टाइल" बन जाती है और गांव में वही बीमारी "सुविधा की कमी" कहलाती है। अख़बार बस इस असमानता का आईना थोड़ा साफ करके दिखा देता है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित शोध पद्धति (Mixed Method Approach) का उपयोग किया गया है, जिसमें मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के विश्लेषण शामिल हैं। अध्ययन का उद्देश्य Amar Ujala के शहरी और ग्रामीण संस्करणों में महिला स्वास्थ्य संबंधी समाचारों की प्रस्तुति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके लिए वर्ष 2025-26 के पिछले एक महीने के मुख्य शहरी तथा जिला/देहात संस्करणों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण (Purposive Sampling) के आधार पर किया गया। अध्ययन में स्वास्थ्य समाचार और स्वास्थ्य कॉलम को विश्लेषण की इकाई बनाया गया। डेटा संग्रहण हेतु विशेषज्ञों के साक्षात्कार, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट और समाचार पत्र सामग्री का उपयोग किया गया। विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) के माध्यम से स्वास्थ्य विषयों, प्रस्तुतीकरण शैली और समाचारों की प्राथमिकताओं का अध्ययन किया गया।

शोध का उद्देश्य केवल समाचारों का अध्ययन करना नहीं, बल्कि उनके माध्यम से समाज में महिला स्वास्थ्य की वास्तविक स्थिति को समझना भी है।

ग्रामीण बनाम शहरी रिपोर्टिंग की चुनौतियां

1. शहरी: यहाँ रिपोर्टिंग अक्सर "ग्लेमरस" स्वास्थ्य मुद्दों या उच्च-वर्गीय समस्याओं की ओर झुकी हो सकती है, जिससे झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाली शहरी गरीब महिलाओं के मुद्दे छूट जाते हैं।
2. ग्रामीण: यहाँ स्वास्थ्य रिपोर्टिंग अक्सर 'घटना-प्रधान' (Event-based) होती है। जैसे- "अस्पताल में डॉक्टर न मिलने पर महिला की मृत्यु"। एंबुलेंस जाम में फँसने पर जच्चा बच्चा की मौत । जबकि इसमें स्वास्थ्य शिक्षा (Health Education) का अभाव दिखता है। एनीमिया, सर्वाईकल कैंसर, मीनोपॉज, फ़ाइब्रॉइड, हड्डी रोग, मानसिक स्वास्थ्य, अनियमित मासिक धर्म आदि स्वास्थ्य समस्याओं पर खबरें या तो नहीं दिखती या जगह एक या दो कॉलम की पाती हैं ।

मुख्य निष्कर्ष

1. अमर उजाला ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी योजनाओं (जैसे जननी सुरक्षा योजना) के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सक्रिय है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

2. शहरी संस्करणों में मानसिक स्वास्थ्य और कार्य-जीवन संतुलन (Work-life balance) जैसे आधुनिक विषयों को अधिक स्थान मिलता है।
3. ग्रामीण रिपोर्टिंग में आज भी स्वास्थ्य संबंधी भ्रांतियों और सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देने वाले लेखों की कमी है।

सुझाव

1. ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशेष 'स्वास्थ्य परिशिष्ट' (Health Supplement) की आवश्यकता है जो स्थानीय भाषा और सरल उदाहरणों का प्रयोग करे।
2. ग्रामीण महिलाओं की सफलता की कहानियों (Case Studies) को अधिक स्थान मिलना चाहिए जिन्होंने स्वास्थ्य संबंधी बाधाओं को पार किया है।
3. शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के बीच के 'डिजिटल डिवाइड' को कम करने के लिए समाचार पत्र के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर क्यूआर कोड के माध्यम से डॉक्टर परामर्श जैसी सुविधाएं दी जा सकती हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि Amar Ujala ने महिला स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाचार पत्र ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं के प्रति जागरूकता फैलाने के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य, फिटनेस और कार्य-जीवन संतुलन जैसे आधुनिक स्वास्थ्य विषयों को प्रमुखता देता है।

हालांकि, ग्रामीण और शहरी रिपोर्टिंग के बीच स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। शहरी कवरेज जागरूक जीवनशैली और निवारक स्वास्थ्य पर केंद्रित है, जबकि ग्रामीण कवरेज मुख्यतः स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, कुपोषण और उपचार संबंधी समस्याओं तक सीमित रहती है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी भ्रांतियों और सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देने वाले लेख अपेक्षाकृत कम हैं।

अध्ययन यह सुझाव देता है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए सरल भाषा में विशेष स्वास्थ्य सामग्री, प्रेरणादायक केस स्टडी तथा डिजिटल स्वास्थ्य सुविधाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। संतुलित और समावेशी स्वास्थ्य रिपोर्टिंग ही महिलाओं में वास्तविक स्वास्थ्य जागरूकता और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक हो सकती है।

समाज का अजीब संतुलन है। शहर में स्वास्थ्य “लाइफस्टाइल” है और गांव में अब भी “जरूरत”। अख़बार कम से कम दोनों को एक ही पन्ने पर ला सकता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

संदर्भ सूची

1. Amar Ujala. *Amar Ujala*. Various Editions, 2025-2026.
2. International Institute for Population Sciences (IIPS) and Ministry of Health and Family Welfare. *National Family Health Survey* (*NFHS-5/6*) *Report*. Government of India, 2021-2026.
3. *Development Communication: Research Papers and Studies*. Various Authors, Various Journals and Publications, accessed 2026.
4. Sharma, Sudha, and Neha Mahajan. "Study on Menopausal Symptoms and Quality of Life among Rural and Urban Women." Mar. 2015.
5. Warren, N. Barefoot, and J. C. Smalley. "Health Risks among Rural Lesbian Women in the United States." 2017.